भारत में प्रशासनिक भ्रष्टाचार के कारण एवं सुधार के उपाय

विजय भांकर मिश्रा

डॉ भाहाबुद्दिन

भ्रष्टाचार आज वैश्विक समस्या बन गया है। यो तो भ्रष्टाचार कमोवेश सदयों से चलता आ रहा है जैसा कि महान राजनीतिक विचारक कौटिल्य ने स्वीकार किया है कि राजकोष का एक प्रतिशत भाग सरकारी सेवकों द्वारा हजम कर लिया जाता है। उन्होने अपनी पुस्तक "अर्थशास्त्र" में भ्रष्टाचार का 40 प्रकारो का उल्लेख किया है। उन्हीं के शब्दों में –"जिस प्रकार जीभ पर रखे हुए शहद का स्वाद न लेना असंभव है उसी प्रकार किसी शासकीय अधिकारी के लिए राज्य के राजस्व के एक अंश का भक्षण न करना असंभव है। " आज तो भ्रष्टाचार का स्वरूप विकराल होता जा रहा है। आज कल तो कुछ ऐसे भी लोकसेवक हैं जो राष्ट्रहित को तिलांजली देकर आर्थिक लोभ में राष्ट्रसुरक्षा से संबंधित गुप्त दस्तावेज दुशमनों को मुहैया करा दे रहे है।